अनमोल वाणी

कबीर

कवि परिचय :

कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था । कहा जाता है कि वे एक तालाब के किनारे मिले । एक जुलाहा दंपति ने उनका पालन पोषण किया । वे कपड़ा बुनने का काम करते थे । ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन बड़े अनुभवी थे । बुद्धि, विवेक से काम लेते थे । बहुत बातें जानते थे । वे सभी धर्मों को बराबर मानते थे । वे ईश्वर के निर्गुण, निराकार रूप को मानते थे । उस समय धर्म और समाज में बड़ी गड़बड़ी थी । कबीर ने अपनी वाणी से उसे दूर करने का प्रयास किया । लोगों में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद भाव था । विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में झगड़ते थे । बाह्य आडंबर, अंधविश्वास फैल गया था । कबीर जाति भेद, मूर्त्ति पूजा, बाहरी आडंबर आदि का विरोध करते थे । वे कहते थे कि सब मनुष्य बराबर हैं । वे बाहरी धार्मिक कर्म काण्ड की अपेक्षा भक्तिभाव पर बल देते थे । वे तीर्थ व्रत, जप-तप, मूर्त्ति-पूजा आदि बाहरी काम छोड़ सच्चे दिल से भगवान की भक्ति करने को कहते थे । वे सदाचार, सच्चाई, भाईचारे, धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करते थे । कबीर का व्यक्तित्व सादा-सीधा पर बड़ा प्रभावशाली था । उनकी वाणियों को उनके शिष्यों ने 'बीजक' नामक ग्रंथ में संगृहीत किया । उनकी भाषा मिश्रित खड़ीबोली है, जो उस समय जन समाज में प्रचलित थी । वे अपने गुरु रामानंद स्वामी का बड़ा आदर करते थे ।

दोहे

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै, साँच है, ताके हिरदै आप ।।
जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।
तोकु फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ।।
धीरे-धीरे रे मना, धीरे-धीरे सब कुछ होय ।
माली सीचें सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।।

शब्दार्थ :

साँच – सत्य । बराबर – समान । तप – तपस्या, ज्ञान । झूठ – मिथ्या । पाप – पातक, कुकर्म, अघ । जाके - जिसके । हिरदै – हृदय । ताके – उसके । आप – ईश्वर, भगवान । तोको – तुझको । काँटा – कंटक । बुबै – बोता है । ताहि – उसे । बोय – बो । तोक – तुझको । बाको – उस, उसको । तिरसूल – त्रिशूल, त्रिगुण । मना – मन । होय – होता । माली – पेड़ पौधे लगाने या सींचने वाला । सींचे – सींचन करना, पानी देना, सींचाई । सौ – 100 । घड़ा – मटका, कलश, गागर, जलपात्र । ऋतु – मौसम ।

दोहों को समझें :

1. सत्य हमेशा महान होता है । संसार में सत्य के समान तपस्या या ज्ञान नहीं । उसी प्रकार झूठ या मिथ्या के बराबर पाप या बुरा काम नहीं । कारण बुराकाम करना पाप है । जिसके हृदय में सत्य का निवास है अर्थात् जो हमेशा सच बोलता है, उसका हृदय निर्मल है । पाप रहित है । उसके निर्मल हृदय में भगवान विराजमान करते हैं । अर्थात् सत्यवादी को भगवान के दर्शन मिलते हैं । वे महान होते हैं, तत्त्व दर्शी होते हैं । समाज सत्यवादी का आदर करता है, पापी का अनादर करता है ।

2. यह सत्य है, प्रमाणित है कि अच्छे काम करने वालों को अच्छा फल मिलता है और बुरे काम करनेवाले को बुरा फल मिलता है । अर्थात् सभी को कर्म के अनुसार फल भुगतना पड़ता है । जैसी करनी वैसी भरनी । कबीर के कहने का अर्थ है कि जो तेरे रास्ते में काँटा बोता है अर्थात् जो तेरी बुराई करता है, तुम उसके रास्ते पर फूल बिछा दो अर्थात् तुम उसकी भलाई करो । इसका नतीजा यही होगा कि तुम्हारी अच्छाई से उन्हें अच्छा फल मिलेगा । उसकी बुराई के लिए उसको बुरा फल मिलेगा । मतलब हुआ कि अच्छा काम करो और अच्छा फल पाओ ।

3. कबीर दास का कहना है कि काम धीरे धीरे होता है । उसके लिए धैर्य की आवश्यकता है । इसके लिए उदाहरण देकर कबीर कहते हैं कि माली के सौ घड़ा पानी सींचने पर भी किसी भी पेड़ में समय के पहले जल्दी से फल नहीं लग जाते । इसलिए ऋतु की प्रतीक्षा करनी पड़ती है । वक्त के आने से ही पेड़ में फल लगते हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) साँच या सत्य के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

(ख) बुराई करनेवालों की भलाई क्यों करनी चाहिए ?

(ग) धीरे-धीरे सबकुछ कैसे होता है – इसके लिए कवि ने कौन सा उदाहरण दिया है ?

2. निम्नलिखित पदोंके अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।

(ख) जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।

(ग) माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) किसके बराबर तप नहीं है ?

(ख) झूठ के बराबर क्या नहीं है ?

(ग) जिसके हृदय में साँच है, उसके हृदय में कौन होते हैं ?

(घ) झूठ की तुलना किसके साथ की गई है ?

(ङ) साँच की तुलना किसके साथ की गई है ?

(च) जो तेरे रास्तेपर काँटा बोता है, तुझे उसके लिए क्या करना चाहिए ?

(छ) पेड़ में कब फल लगते हैं ?

(ज) कौन सौ घड़े पानी सींचता है ?

(झ) इन दोहों के रचयिता कौन हैं ?

(ञ) प्रथम दोहे में 'आप' शब्द का क्या अर्थ है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत या विलोम शब्द लिखिए :

साँच, पाप, बुरा, धीर, काँटा

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुन कर लिखिए :

बराबर, झूठ, पाप, हृदय, फूल, घड़ा, ऋतु

(मौसम, समान, कलुष, दिल, पुष्प, घट)

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

पाप, फूल, फल, माली, घड़ा, काँटा, ऋतु

4. इन शब्दों के खड़ी बोली - रूप लिखिए :

साँच, जाके, हिरदै, तोको, बुबै, बाको, होय

■ ■ ■

सूरदास

कवि परिचय :

भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि सूरदास हिन्दी के सूर्य जैसे तेजस्वी कवि हैं । उनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट सीही गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ । वे अंधे थे, पर मालूम पड़ता है कि वे जन्मांध नहीं थे । मथुरा और आगरा के बीच यमुना नदी के तटपर स्थित गऊघाट पर उन्होंने संगीत, काव्य और शास्त्र का अभ्यास किया और विनय के भाव से पदों की रचना की । आगे चलकर वे बल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और ब्रज जाकर गोवर्धन के पास पारसोली नामक जगह पर अपना स्थायी निवास बनाकर पद लिखते रहे ।

सूरदास मानव-मन के बड़े पारखी थे । वात्सल्य भाव के तो वे मर्मज्ञ थे । श्रीमद् भागवत महापुराण के आधार पर रचित उनका विशाल ग्रंथ 'सूर सागर' हिंदी की अमूल्य निधि है । ये बच्चों के, माताओं के, साथियों के, नारी और पुरुषों के मनोभावों के पारंगम कवि थे ।

यह पद :

प्रस्तुत पाठ में महाकवि सूरदास द्वारा रचित कृष्ण की बाललीला के दो पदों को रखा गया है । ये पद 'सूर सागर' से संकलित हैं।

पद

1. **मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो ।**
मोसों कहत मोल को लीन्हों, तू जसुमति कब जायो ।।
कहा कहौं एही रिस के मारे, खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ।।
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देते बलवीर ।।
तू मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहूँ न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै ।।
सुनहू कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ।।

2. **हरि अपने आँगन कछु गावत ।**
तनक-तनक चरनन सौं नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ।।
बाँह उचाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत ।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत ।।
माखन तनक आपने कर लै, तनक-बदन मैं नावत ।
कबहुँ चितै प्रतिबिम्ब खंभ मैं, लौनी लिए खबावत ।।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष आनंद बढ़ावत ।
सूर स्याम के बाल-चरित ये, नित देखत मन भावत ।।

शब्दार्थ :

मैया – माँ । मोहि – मुझे/मुझको । दाऊ – बड़ेभाई बलराम । खिझायो – चिढ़ाया । मोसों – मुझसे । मोल – खरीद कर । लीन्हों – लाया गया । जसुमति – यशोदा । जायो – जन्मा । रिस – क्रोध । पुनि-पुनि – बार-बार । तुमरो – तुम्हारा/तुम्हारे । तात – पिता । कत – क्यों, किसलिए । स्याम – काला । चुटकी – अंगूठे और पास की अंगुली से बजाना। ग्वाल – गोपाल । सिखै – सिखा देते । बलवीर – बलराम । मोही – मुझे ही । दाउहि – बड़े भाई से । रिझावत – प्रसन्न होते हैं । कबहूँ – कभी भी । खीझै – गुस्सा करना । चितै – देख कर । लौनी – मक्खन । खवावत – खिलाते हैं । दुरि – छिपकर । तनक-तनक – नन्हें-नन्हें । खीझै – गुस्सा करना । रिस – गुस्सा । लखि – देखकर । रीझै – प्रसन्न होना । चबाई – निंदक, चुगलखोर । जनमत – जन्मसे । धूत – शैतान, शरारती । गोधन – गाय रुपी धन । सौं – सौगंध, शपथ, कसम । पूत – पुत्र, बेटा ।

पदों को समझें :

1. इस पद में कृष्णकी बाललीला का वर्णन है । बालक कृष्ण माँ यशोदा के पास शिकायत करते हैं कि माँ ! मुझे बलराम भैया चिढ़ाते हैं । वे मुझे कहते हैं कि तुझे खरीद कर लिया गया है । जसुमति ने तुझे जन्म नहीं दिया है । इसलिए मैं उनके साथ खेलने नहीं जाता । वे बार-बार मुझे पूछते हैं कि कौन तेरी माता और कौन तेरे पिता हैं ?

नंद गोरे हैं, यशोदा गोरी है, तू क्यों श्यामल/काला है । यह सुनकर मुझे चिढ़ाने के लिए ग्वाल बालक चुटकी बजाकर नाचते हैं । बलराम भैया उन्हें सिखा देते हैं । तूने सिर्फ मुझे मारना सीखा है । बलराम भैया पर खीझती नहीं । मोहन के मुख पर गुस्सा देख कर और उनकी गुस्सैली वाणी सुनकर यशोमति प्रसन्न हो जाती हैं । माँ कहती है कान्हा सुन, यह बलराम चुगलखोर है वह जन्म से शरारती है । मैं गोधन की कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तेरी माता और तू मेरा पुत्र है ।

2. बालक कृष्ण घर के आंगन में अकेले खेल रहे हैं ? उनका यह खेल सबके मन को मोह लेता है । यह वर्णन बहुत ही हृदयग्राही है ।

भगवान कृष्ण अपने आप कुछ गा रहे हैं । वे गाते-गाते नन्हें चरणों से नाचते भी हैं और मन मगन भी हो रहे हैं । कभी वे हाथ उठाकर काली एवं सफेद गायों को बुलाते हैं, तो कभी नंद बाबा को पुकारते हैं । वे कभी घर के भीतर चले जाते हैं । घर में जाकर थोड़ा मक्खन हाथ में लेकर खाते हैं, और थोड़ा सा मुँह में लगा लेते हैं । कभी खंभे में अपना प्रतिबिंब देखकर उसे माखन खिलाते हैं । माता यशोदा दूर से ही खड़ी होकर यह लीला देख रही हैं और आनंदित हो रही हैं । सूरदास कह रहे हैं कि कन्हैया की यह बाललीला रोज-रोज देखने पर भी प्यारी लगती है । इससे मन तृप्त नहीं होता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कृष्ण यशोदा से क्या शिकायत करते हैं और क्यों ?

(ख) बलराम कृष्ण से क्या पूछते हैं ?

(ग) यशोदा किसकी कसम खाती हैं और क्या कहती हैं ?

(घ) चुटकी देकर ग्वाल-बालक क्यों नाचते हैं ?

2. निम्नलिखित पदों के अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ।

(ख) सूर स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत ।

(ग) तनक-तनक चरननि सौं, नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ।

(घ) कबहुँक चितै प्रतिबिम्ब खंभ में, लोनी-लिए खबावत ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) बाललीला (पद) के रचयिता कौन हैं ?

(ख) कौन कहते हैं कि तुझे मोल कर लाया गया है ?

(ग) बलराम पुनः पुनः क्या कहते हैं ?

(घ) ग्वाले बालक किस तरह हँसते हैं ?

(ङ) माँ यशोदा ने किसे मारना सिखा है ?

(च) कौन दाऊ पर नहीं खीझती है ?

(छ) स्याम शरीर का अर्थ क्या है ?

(ज) 'जनमत ही को धूत' का अर्थ क्या है ?

(झ) माँ यशोदा किसकी सौगंध खाती हैं ?

(ञ) कृष्ण किसे माखन खिलाते हैं ?

(ट) यशोमति क्या देखकर हर्षित हो जाती हैं ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :

मोल, सौं, पूत, तनक, धूत, बाँह, मैया, खिझायो, गैयनि, कजरी

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

नित, चरन, कर, बाँह, रिस, तात, जात, बदन,

स्याम, धूत, सौं, पूत, शरीर, खीझे, चबाई

■ ■ ■

तुलसीदास

कवि परिचय :

भक्त कवि तुलसी दास का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ था और देहांत सन् 1633 में । पितामाता के स्नेह से वंचित होकर बचपन में उनको बड़ा कष्ट उठाना पड़ा । सौभाग्य से गुरु नरहरिदास ने उनकी बड़ी मदद की । तुलसी रामभक्त थे और यौवन काल में ही साधु बन गये । रामानंद उनके गुरु थे । वे हिन्दी और संस्कृत के बड़े पंडित थे । उस समय मुगलों का शासन था । देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थियाँ अस्तव्यस्त थीं । तुलसी दास ने रामचरित मानस लिखकर लोगों के सामने निष्कपट जीवन और आचरण का उदाहरण रखा । आज भी यह देश का अत्यंत लोकप्रिय ग्रंथ है । जन साधारण उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं । दु:खी, निराश तथा भक्त लोगों को रामचरितमानस पढ़कर सुख शान्ति मिलती है । विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि उनके अनेक ग्रंथ हैं । वे अवधी और ब्रजभाषा दोनों में लिखते थे ।

दोहे

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँओर ।
वसीकरण यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर ।।
गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ।।
रोष न रसना खोलिए, बरु खोलिओ तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित, बोलिअ वचन विचारि ।।

शब्दार्थ :

मीठे – मीठा, मधुर । वचन – बात, वाणी । ते – से, द्वारा । उपजत – उपजना, पैदा होना । चहुँओर – चारों ओर । वसीकरण – वशीकरण, वश में या अधीन में कर लेना । मंत्र – प्रभावी शब्द, सलाह, परामर्श, वेदों के गायत्री आदि वेदादि साधन वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो । परिहरु – परित्याग करना, त्यागना, छोड़ना । कठोर – कठिन, कड़ा, शक्त, दृढ़, अप्रिय । गोधन – गाय धन स्वरूप है । गज – हाथी । बाजि – घोड़ा, अश्व ।

खान – भंडार । आवे – आता है । सन्तोष धन – सन्तोष रूपक धन । धूरि – धूल, रेत । समान – बराबर । रोष – गुस्सा, क्रोध, रुखाई । रसना – जीभ, जिह्वा, जबान, रसना, खोलना – बोलना । बरु – बल्कि, वरन् । तरवारि – तलवार, खड्ग, कृपाण । परिनाम – परिणाम, नतीजा । हित – मंगल, भलाई । विचारि – विचार करके, सोच समझकर ।

दोहों को समझें :

1. मीठे वचन सबको प्रिय होते हैं । मीठी वाणी से हम सबको अपने वश में कर सकते हैं । मीठी वाणी से सब ओर शान्ति बनी रहती है । सबको सुख मिलता है । ठीक इसके विपरीत कडुए वचन सबको दु:ख पहुँचाते हैं । मीठे वचन तो वशीकरण मंत्र (सबको वश में करनेवाले) के समान है । इसलिए हमें कडुए वचन न बोलकर मीठी वाणी ही बोलनी चाहिए ।
2. आम तौर पर हमारी धारणा है कि जिसके पास पर्याप्त गाय-भैंस, हाथी या घोड़े हैं या धनरत्न, हीरा, मोती आदि हैं, वह सबसे बड़ा धनी है । लेकिन तुलसी दास के अनुसार ये सारे धन होते हुए भी अगर मन में सन्तोष नहीं है तो ये सब मूल्य हीन हैं । सन्तोष रूपी धन के सामने ये सब धूलि के बराबर तुच्छ हैं । क्योंकि इस प्रकार के धनसे सुख, शान्ति नहीं मिलती । मन चिंतित रहता है ।
3. जब क्रोध अधिक हो तो जीभ नहीं खोलनी चाहिए । क्रोध में मनुष्य कड़वी बातें बोल जाता है । अर्थात् किसी को कुछ नहीं कहना चाहिए । ये कड़वी बातें तलवार से भी अधिक घाव करती हैं । कड़वी बातों का प्रहार सीधे हृदय और मन पर होता है । तलवार शरीर पर घाव करती है, मगर कड़वी बातें दिल, मन को घायल करके अधिक कष्ट देती हैं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो - तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कठोर वचन का क्यों परिहार करना चहिए ?
(ख) मीठे वचन से क्या लाभ होता है ?
(ग) सन्तोष धन के सामने कौन-कौन से धन धूरि के बराबर माने जाते हैं ?
(घ) रोष या गुस्से के समय क्या नहीं खोलना चाहिए और क्यों ?
(ङ) मीठे वचन की तुलना वशीकरण मन्त्र से क्यों की गई है ?
(च) हमें सोच विचार कर क्यों बोलना चाहिए ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँओर ।

(ख) जब आवे सन्तोषधन, सबधन धूरि समान ।

(ग) रोष न रसना खोलिए बरु खोलिओ तलवार ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) किससे चारों ओर सुख उपजता है ?

(ख) वशीकरण का मंत्र क्या है ?

(ग) हमें क्या परिहार करना या छोड़ना चाहिए ?

(घ) कवि ने सन्तोष की तुलना किस से की है ?

(ङ) कब रसना नहीं खोलनी चाहिए ?

(च) किस धन के सामने सारे धन तुच्छ माने जाते हैं ?

(छ) सन्तोष धन के सामने सब धन किसके समान होते हैं ?

(ज) विचार करके वचन कहने से क्या होता है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

मीठा, सुख, कठोर, छोड़ना, समान, खोलना

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

वचन, सुख, कठोर, उपजना, गो, गज, बाजि

3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से सार्थक वाक्य बनाइए :

वसीकरण, कठोर, गोधन, सन्तोष, तलवार

4. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

चहुँओर, वसीकरण, धूरि, तरवारि, परिनाम

5. निम्नलिखित शब्दों के साथ करण कारक 'से' चिह्न का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :

वचन, मंत्र, धन, तलवार

■ ■ ■

रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरानाम अब्दुर्रहीम खानखाना है । उनका जन्म सन् 1556 में हुआ था । वे अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के पुत्र थे । शाही महल में उनका बचपन बीता । बाद में उन्हें गुजरात की सूबेदारी मिली ।

रहीम अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे जानकार थे । वे हिन्दू संस्कृति और भक्ति-भावना से प्रभावित थे । उन्होंने दरबार का शाही ठाट देखा । वे बड़े पद पर काम करते थे । लेकिन उनमें गर्व का नाम न था । आम जनता के जीवन को देखा था । रहीम एक सहृदय, स्वाभिमानी, वीर और दानी व्यक्ति थे । साधारण मानव के प्रति उनके मन में बड़ा प्रेम था । उनके दोहों में अनुभूति की गहराई मिलती है । भक्ति, नीति, वैराग्य, श्रृंगार जैसी बातें उनकी रचनाओं में पायी जाती हैं । रहीम - काव्य के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । इनमें रहीम रत्नावली, रहीम विलास प्रामाणिक हैं ।

दोहे

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिय हिं न पान ।
कहि रहीम पर काज हित संपति संचहि सुजान ।।
रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवारि ।।
रहिमन पर उपकार के करत न यारी बीच ।
मांस दिये शिवि भूप ने , दिन्हीं हाड़ दधीचि ।।

शब्दार्थ :

तरुवर – पेड़, वृक्ष, तरु । खात – खाता । सरवर – तालाब, पुष्करिणी । पियहिं – पीता है । पान – पानी, जल । पर – पराया । हित – मंगल । संचहि – एकत्र करना, संचय करना, सपत्ति धन, वित्त जमा करना । सुजान – उत्तम लोग । लघु – छोटा । डारि – डारना, फेंकना, डालना, सुई – सूजी, सुई, सूची । तलवारि – तलवार, कृपाण, खड्ग । यारी – दोस्ती । भूप – राजा, नरेश, नृपति, भूपति ।

दोहों को समझें :

1. पेड़ अपना फल नहीं खाता । तालाब अपना पानी नहीं पीता । ये दोनों क्रमशः दूसरों के लिए फल और पानी की बचत करते हैं । कारण फल खाने से दूसरों की भूख मिटती है । उसे आनन्द मिलता है । पानी पीने से प्यास मिटती है । सन्तोष होता है । ज्ञानी लोग सूझबूझवाले हैं । इसलिए वे दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं । इससे परोपकार होता है । कारण परोपकार एक महान कार्य है ।

2. कवि रहीम का कहना है कि अगर बड़े लोग आपके मित्र हैं, तो छोटे लोगों को छोड़ मत दीजिए । कारण समाज में दोनों का अलग-अलग महत्व होता है । इसलिए उन्होंने एक उदाहरण देकर कहा है कि जहाँ छोटी सुई की जरूरत होती है, वहाँ आपके पास तलवार है तो क्या उससे काम होगा ? नहीं । इसलिए दोनों का आदर करना चाहिए ।

3. कवि रहीम कहते हैं कि केवल जहाँ दोस्ती या मित्रता हो वहाँ उपकार नहीं किया जाता । परोपकार तो किसीके भी साथ किया जा सकता है । हम कहीं भी किसी भी स्थान पर आवश्यकता पड़ने पर दूसरे का उपकार कर सकते हैं । जैसे – शिवि राजाने अपना मांस अपरिचित बाज को दिया । दधीचि ऋषि ने देवताओं की मदद के लिए हड्डियाँ दे दीं, उससे बज्र बनाया गया । देवताओं का शत्रु बृत्रासुर मारा गया । उससे दधीचि को किसी लाभ की आशा नहीं थी, केवल परोपकार की भावना थी ।

शिवि :

पुराने जमाने में शिवि नामक एक राजा थे । वे बड़े परोपकारी थे । एकबार बाज पक्षी से डरकर एक कबूतर उनकी शरण में आई । राजा ने उसे शरण दे दी । उसको खाने वाला भूखा बाज उसके पीछे-पीछे आकर अपने आहार के लिए राजा से कबूतर माँगा । उसके बदले राजा शिवि ने उसे अच्छे खाद्य देने को कहा । पर बाज राजी नहीं हुआ । उसने राजा से कबूतर के बराबर मांस माँगा । अन्त में राजा ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काट कर भूखे बाज को दे दिया था । आखिरकार वे तराजू पर बैठ गए । अपना पूरा बलिदान कर दिया ।

दधीचि :

दधीचि एक परोपकारी ऋषि थे । वे सरस्वती नदी के किनारे रहते थे । वृत्रासुर नामक एक बड़ा पराक्रमी राक्षस था । उससे मनुष्य क्या देवतागण भी डरते थे । उसके आतंक से स्वर्ग में हाहाकार मच गया । उनसे रक्षा पाने के लिए देवगण भगवान विष्णु के पास पहुँचे । भगवान विष्णु ने सलाह दी कि ऋषि दधीचि की अस्थियों से बज्र बनाया जायेगा । उसी बज्र से ही वृत्रासुर मारा जायेगा । भगवान विष्णु से परामर्श लेकर देवगण ऋषि दधीचि के आश्रम पहुँचे । ऋषि दधीचि ने देवगण का यथोचित आदर सत्कार किया । उनके शुभागमन का कारण पूछा । उनसे सारी बातें सुनकर ऋषि दधीचि ध्यान मुद्रा में बैठ गये । उनकी आत्मा परमात्मा में बिलीन हो गयी । उनकी अस्थियों से बज्र बनाया गया । उस बज्र से वृत्रासुर मारा गया । परोपकारी ऋषि दधीचि ने देवताओं की भलाई के लिए अपनी हड्डियाँ दे दी थीं ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो/तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) तरुवर और सरवर क्या करते हैं ?

(ख) शिवि राजा ने क्यों मांस दान दिया ?

(ग) छोटों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए – क्यों ?

(घ) ऋषि दधीचि ने किसलिए हाड़ या अस्ति दान दिया था ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

(क) तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पिय हिं न पान ।

(ख) जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।

(ग) मांस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीचि ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) तरुवर क्या नहीं खाता है ?

(ख) सरवर क्या नहीं पीता है ?

(ग) सुजान किसलिए संपत्ति का संचय करता है ?

(घ) बड़े लोगो को देखकर लघु का क्या नहीं करना चाहिए ?

(ङ) सुई की जगह अगर तलवार मिलजाए तो काम होगा या नहीं ?

(च) परोपकार करते समय क्या जरुरी नहीं है ?

(छ) शिवि भूप ने क्या दान दिया था ?

(ज) किसने अपनी हड्डियों का दान दिया था ?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों के खड़ीबोली-रूप लिखिए :

नहिं, सरवर, पिय, पान, तलवारि, काज

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

पर, हित, सुजान, बड़ा, लघु, उपकार

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

सरवर, तरु, पान, संपत्ति, सुजान, लघु, तलवारि, भूप, यारी, हाड़

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्णय कीजिए :

फल, संपत्ति, सुई, तलवार, मांस

5. 'को' परसर्ग का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाइए ।

जैसे – राम को किताब दो ।

■■■